आलस्य और अलबेलापन - 60

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **बेफिकर बादशाह का अर्थ यह नहीं कि अलबेले रहें, हो अलबेलापन और कहे हम तो बेफिकर रहते हैं।** अलबेलापन, यह बहुत धोखा देने वाला हैं। तीव्र पुरुषार्थ के भी वही शब्द हैं और अलबेलेपन के भी वही शब्द हैं।

➳ _ ➳ **तीव्र पुरुषार्थी सदा दृढ़ निश्चय होने के कारण यही सोचता है - हर कार्य हिम्मत और बाप की मदद से सफल हुआ ही पड़ा हैं** और अलबेलेपन के भी यही शब्द है, हो जायेगा, हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है। कोई कार्य रहा है क्या, हो जायेगा। तो शब्द एक है लेकिन रूप अलग-अलग है (30.11.2003)

➢➢ हुआ ही पडा है

➳ _ ➳ **तीव्र पुरुषार्थी और अलबेलेपन दोनो के शब्द वही है पर अंतर है भाव में**

→ एक मे दम है एक बेदम है

→ **एक मे निश्चय है सफलता है स्वयं मे विश्वास है भगवान मे विश्वास है स्वयं की हिम्मत है एक में स्वयं करने का भाव है।**

→ एक मे भरोसा है एक मे दिलासा है और एक मे हिम्मत नही है

➳ _ ➳ **कोई कार्य रहा है क्या, हो जायेगा**

→ दृढ संकल्प वाला तीव्र पुरुषार्थी के इस बोल मे

- वजन है
- **आत्मविश्वास झलकता है**
- बोल मे सामर्थ्य है
- प्रभावशाली बोल है
- दिखावे वाले नही है
- **अंतकरण से निकलने वाले है**

→ बोल से ही पता चलता है ये करेगा

→ **एक एक बोल मे जैसे कि हुआही पडा है ये भाव समाया हुआहै**

➳ _ ➳ दृढ संकल्प वाला मायूसी दिलशिकस्त नही हो सकता।

➳ _ ➳ दोनो के शब्द एक ही है हुआ ही पडा है हुआ ही पडा है कोई कार्य रहा है क्या, हो ही जायेगा

→ **लेकिन रूप अलग अलग है भाव अलग अलग है।**

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **सहज योगी का यह मतलब नहीं कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो। (31.12.2002)**

➢➢ पुरूषार्थ कैसा हो

➳ _ ➳ **पुरुषार्थ श्रेष्ठ हो**

➳ _ ➳ अनुकरणीय हो

➳ _ ➳ **पुरुषार्थ सहज भी हो**

→ **जहां मोहब्बत है वहां मेहनत का अनुभव नही होता**

- वहां होलीडे का अनुभव होगा ।
- होलीडे तो है ही पर मोहब्बत होली डे का अनुभव करायेगी
- freedom का भी अनुभव करायेगी

➳ _ ➳ **क्योकि शरीर और बुद्धि बिजी रहते है इसलिए व्यर्थ संकल्प से मुक्त रहते है**

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जिसको आप मेरा कहते हो वह मेरा है या रावण का है? किसका है? आपका है? नहीं है? तो मेरा क्यों कहते हो! कहते तो ऐसे ही हो ना कि मेरा संस्कार ऐसा है? **तो आज से यह नहीं कहना, मेरा संस्कार।** नहीं।

➳ _ ➳ कभी यहाँ वहाँ से उड़के किचड़ा आ जाता है ना! तो यह रावण की चीज़ आ गई तो उसको मेरा कैसे कहते हो! है मेरा? नहीं है ना? तो अभी कभी नहीं कहना, जब **मेरा शब्द बोली तो याद करो मैं कौन और मेरा संस्कार क्या? बॉडी कॉन्सेस में मेरा संस्कार है, आत्म अभिमानी में यह संस्कार नहीं है।** तो अभी यह भाषा भी परिवर्तन करना। **मेरा संस्कार कहके अलबेले हो जाते हो। कहेंगे भाव नहीं है, संस्कार हैं (17.10.2003)**

➢➢ **स्वमान - मैं आदि अनादि पवित्र आत्मा हूं**

➳ _ ➳ मै ओरिजनली प्योर सोल हूं

→ **अपने आदि स्वरूप मे स्थित हो जाना है**

- जो बीच का है वो हमारा नही है

→ जिसको हमने अपना मान लिया है वो मेरा स्वरूप नही है ।

➳ _ ➳ **प्योरिटी की ब्यूटी का आधार**

➳ _ ➳ **प्रथम पुरस्कार**

→ **सिर पर ताज वो भी फुल ताज**

➳ _ ➳ **वी आई पी सेक्शन**

→ **वो बने बनाए है**

- **वो आठ है**

→ बी होली उनका स्लोगन नही है

- **पवित्रता उनका निजी संस्कार है**

→ मेहनत नही करनी पडी

→ पुरूषार्थ भी नही करना पडा

→ **स्वप्न मे भी कोई महीन दाग नही है**

➳ _ ➳ **फस्ट क्लास सेक्शन की क्वालिफिकेशन**

→ पहले थोडा पुरुषार्थ किया

- **इसके लिए पुरुषार्थ की लकीर है बाद मे पुरुषार्थ सहज है**
- **तीव्र नालेज की लाइट और माइट से यह कर दिया है**

➳ _ ➳ **दूसरा पुरस्कार**

→ **मस्तक मे भाई भाई की दृष्टि, मणि, तिलक, बिंदी, स्मृति**

→ इसके लिए फस्ट क्लास में आने की विधि है

- **मैं परम पवित्र आत्मा हूं ऑरिजनल पवित्र आत्मा हूं के स्वरुप मे स्थित हो जाना**

- मेहनत की मेकअप करनी पड़ेगी

➳ _ ➳ **तीसरा पुरस्कार**

→ **नयनों मे रूहानियत की झलक**

→ **रूहानी नजर**

→ **जिस्म को देखते भी रूह को देख रहे थे**

- वो प्रजा मे आयेगे ऊच मर्तबा नही होगा

- रायल फैमिली के नजदीक होगे

➳ _ ➳ **चौथा पुरस्कार**

→ **बिछुडे हु एथे बाप से उससे मिलने की खुशी की लाली**

→ आत्मा की लाली परमात्मा की लाली

→ चश्मा लाल

→ **बाप के लाल**

➳ _ ➳ **पांचवा पुरस्कार**

→ **होठों पर मुस्कुराहट है आत्मा परमात्मा के मिलन की**

➢➢ ऑरिजनल स्वरूप

➳ _ ➳ **मैं हूं ही पवित्र आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप मे टिक जाना**

→ उसकी विधि है उसके लिए बार बार वास्तविक स्वरूप का चिंतन करना

➳ _ ➳ **Thinking**

→ एक है सोचना एक है करना।

➳ _ ➳ **आत्मा जब स्वरूप मे स्थित हो जाती है तो सोचना भी कम हो जाता है या बंद हो जाता है**

→ जब ज्यादा सोच रहे है तो आत्मा से दूर है

→ जब समीप है तो सोचना भी कम हो रहा है

➳ _ ➳ क्योकि वो स्वरूप मे स्थित है वो witness की अवस्था है साक्षी भाव स्वत ही आ जायेगा।

➳ _ ➳ **क्योकि जब हम ओरिजिनल स्वरूप मे स्थित होते है तो संकल्प और सब कुछ धीरे धीरे सब गुणो का अनुभव होने लगता है**

→ याद करने की भी जरूरत नही रहती वो है

→ यहां से बाहर नही जाना आत्मा मे ही स्थित रहना है

→ आत्मा के ऑरिजनल स्वरूप मे स्थित होना है।

- **मैं आत्मा हूं बस यही अभ्यास है यही पुरुषार्थ है**

- इसी पुरुषार्थ मे ही सब समाया हु आहै।

➳ _ ➳ **आत्मिक स्वरूप मे स्थित होते ही सारे अनुभव स्वत ही होने लगते है**

➳ _ ➳ आत्मा जैसे ही अपने स्वरूप मे स्थित होती है उसे स्मरण होता है

→ मैं किस की हूं

→ मेरा घर कौन सा है

- लाल लाल लाल